शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निमाड़ का ग्रामीण जीवन

ज्योति कानुड़े (शोधार्थी)
डॉ. मनीषा शर्मा (निर्देशक)
तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

निमाड़ का क्षेत्र विस्तृत हैं। यहाँ की लोक भाषा निमाड़ी है। इसकी सीमावर्ती भाषाएं उत्तर में मालवी, पश्चिम में गुजराती, दक्षिण में खानदेशी, पूर्व में होशंगाबादी है। निमाड़ी पर इसकी सीमावर्ती भाषाओं का असर है। निमाड़ के नामकरण में विभिन्न मत है। भारत के नक़्शे में विन्ध्य व सतपुड़ा के बीच जो भू-भाग बसा है वह निमाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। इसे दो भागों में विभाजित किया गया है। पूर्वी निमाड़ व पश्चिम निमाड़। लेकिन रीति-रिवाज, रहन-सहन भाषा और संस्कृति की दृष्टि से दोनों एक और अभिन्न हैं। इसका इतिहास विस्तृत है। यहाँ राजा मान्धता व हैहयवंशी सहस्त्रार्जुन जैसे राजा हुए हैं। यहाँ मान्धता के तीसरे पुत्र ने महे श्वर को बसाया। निमाड़ की मुख्य नदी नर्मदा है। जिस पर यहाँ का जन जीवन निर्भर है। निमाड़ की पौराणिक संस्कृति के केन्द्र में ओंकार, मान्धाता और महिष्मति है।

प्रस्तावना

निमाड़ी लोक साहित्य में साहित्यकारों ने निमाड़ की समस्त जीवन शैली का वर्णन किया है। यहाँ के रीति -रिवाज, परंपरा, तीज त्यौहार , वेषभूषा, यहाँ के पर्यटन स्थल व यहाँ जन्मे साधु-संतों विशेषकर सिंगा जी महाराज, लोक कला और महेश्वर में बनाई जाने वाली महे श्वरी साड़ियों का वर्णन साहित्यकारो ने अपने साहित्य में किया है। निमाड़ में गीतों का विशेष महत्व है। जन्म से मृत्यु तक गाने गाये जाते हैं। हर अवसर पर, तीज त्यौहार पर, गीतो की वर्षा होती है। निमाड़ जिले की आम जनता द्वारा बोली जाने वाली निमाडी ऐसी एक लोक भाषा है। समूचे निमाड़ पर इसका एकछत्र आधिपत्य है। निमाड़ी मुख्यतः उत्तर में मालवे की सीमा को छूते हुए नर्मदा के आस पास ओंकारे श्वर, मंडलेश्वर, मध्य में खरगोन पश्चिम में जोबट, अलीराजपुर, धार, बड़वानी तथा पूर्व में होशंगाबाद के नजदीक हरदा और हरसूद को लेकर दक्षिण सुदुर, खंडवा और बुरहानपुर के आस पास खानदेश की सीमा तक बोली जाती है। भौगोलिक सीमा की दृष्टि से उत्तर में विन्ध्याचल , दक्षिण में सतपुड़ा, पूर्व में छोटी तवा नदी और पश्चिम में हरिणफाल के पास सुदूर धार व बड़वानी को लेकर इसकी सीमायें बनती हैं। यह एक सयोग है कि उत्तर ओर दक्षिण में यदि दो पर्वत सजग प्रहरी की तरह इसके दो किना रों पर खड़े हैं, तो पूर्व और पश्चिम में दो नदियाँ इसकी सीमा रक्षा करती हैं। अन्य भाषा भाषी प्रांतो की दृष्टि से उत्तर में मालवा , दक्षिण खान देश, पूर्व में होशंगाबाद, व पश्चिम में सुदूर गुजरात की सीमा छूती है।

शब्द–ब्रह्म
E- ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संस्कृति की दृष्टि से निमाड़ एक संपूर्ण जनपद है। किसी भी जनपद अथवा सांस्कृतिक अंचल को बनने में ह जारों वर्ष लगते हैं। उससे कहीं अधिक लोकमनीषा की प्रखर प्रतिभा उर्जा का अजस्त्र स्रोत भी लगता है , जिससे संस्कृति का ताना-बाना बुना जाता है। निमाड़ की लोक संस्कृति में लोक की समस्त शक्तियां विद्यमान हैं। लोक संस्कृति एक ऐसी प्रबल धारा है , जिसमें समय , संस्कृति, जीवन निरंतर प्रभाव मान होते है। संस्कृति संपन्न व्यक्ति अनुभवजन्य शब्द में से अपना काम चला लेता है। उसे अक्षर ज्ञान की जरूरत नहीं है। लोक की वाचिक परंपरा के प्रत्येक शब्द और अर्थ में लोक का समस्त ज्ञान-विज्ञान समाहित है। हजारों वर्षो से संस्कृति शब्द के माध्यम से जीवन के अर्थ गौरव को संधारित करती आई है। मनुष्य संस्कृति का निर्माता है और उसका संवाहक भी है। प्रकृति उसके इस कार्य की प्रमुख सहभागी है। निमाड़ का लोकजन परंपरा से इस लोक निष्कर्ष से परिचित ही नहीं है , बल्कि वह जीवन में उसे चरितार्थ करता है। इसे निमाड़ी जन की परिप्रेक्ष्य में भोलई निमाड़ कहा है। एक समर्पित सहज विश्वास करने वाले जन के रूप पहचाने जाने वाला निमाड़ का आदमी अपनी धरती प्रकृति ओर संस्कृति से गहरा स्नेह रखता है। उसे परंपरा से चले आ रहे आर्ष आप्त वचनों के सत्य पर पूरा भरोसा है। वह उसे आँख मीचकर स्वीकार कर चलने में जरा भी हिचक नहीं महसूस करता। उसे पता है , उसके पूर्वजों ने जो राह खोजी हैं वह सत्य की आनंद की राह है उस पर चलने पर कोई गड्डा नहीं आयेगा। जिसमें उसे गिरने का भय हो, अनंत काल से लोक 'महाजन येन गतः सो पन्था' का मार्ग अपनाये हुए है और उसे इस मार्ग में कोई हानि नहीं उठानी पड़ी है। आज भी लोकजन इसी विश्वास का रास्ता अपनाये हुए हैं। निमाड़ जन भी इसी भरपूर वि श्वास के साथ जीता है और अपनी संस्कृति के दाय को पूरा करता है। वह अपनी देहरी पर आने वाले को आदरपूर्वक आव और विदा होते हुए को 'अरू आवजौ' पुनः पधारने का अनुरोध आज भी करता है। यह निमाड़ी संस्कृति का अभिन्न अंग है। लोकसाहित्य ग्रामीण जनता की संपत्ति है। लोक-कथानकों, लोक-गीतो, अंधविष्वासो, प्रादेषिक निजंधरी कथाओं, लोकोक्तियों और पेहलियो को इस साहित्य में विवेच्य विषय माना जाता है। साधारणतः मौखिक परंपरा से प्राप्त और दीर्धकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुये गीत और कथानक ही लोक-साहित्य कहे जाते है। लोक-कथानकों, लोक-गीतों, अंधविष्वासों, प्रादेषिक निजंधरी कथाओं, लोकोक्तियों और पहेलियों को इस साहित्य में विवेच्य विषय माना जाता है। साधारणतः मौखिक परम्परा से प्राप्त और दीर्घकाल तक स्मृति के बल पर चले आते हुये गीत और कथानक ही लोक-साहित्य कहे जाते हैं। लोक-साहित्य की लोक-परंपरा से एकात्मता है। लोक की गंगा युग-युग से बह रही है। लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है। उसमें भूत , भविष्य और वर्तमान सभी कुछ संचित रहते है। निमाड़ की लोक संस्कृति , सामाजिक सांस्कृतिक और धार्मिक परंपरोओं से परिपूर्ण है। यहाँ के लोक-साहित्य में लोकगीत अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करते हैं।

निमाड़ी लोक-साहित्य में लोकगीतों का स्थान सर्वोपरि और महत्वपूर्ण है। इस कारण लोक-साहित्य का सहज परिचय देते हुए लोकगीतों को भी गम्भीरता से विचारा है। निमाड़ की आत्मा है रनुबाई , जो जन-जन के हृदय में देवी रूप में वास करती है। निमाड़ के गणगौर गीतो में रनु-

धणियर के परिवार और उनके जीवन का सहज चित्रण मिलता है। निमाड़ का जनमानस असीम धार्मिक विष्वास से जुड़ा होने के कारण निर्गुण और सगुण दोनों रूपों में ईश्वर की आराधना करता है। विविध धार्मिक पर्व , गणगौर के झालरिया में अद्भूत सुखानुभूति का प्रदर्शन, वियोग, प्रेम, करूणा, उत्साह और साहस आदि बिन्दुओं से किया है। निमाड़ का जन-जीवन नर्मदा को अपने हृदय में बसाने के कारण धार्मिक अधिक है। यहाँ विविध देवी-देवताओं की स्तुति के साथ-साथ नर्मदा की स्तुति अधिक है। जिनमें धार्मिक मूल्यो के साथ-साथ मन को आल्हादित कर देने वाले भाव रहते हैं। लोकगीत और संगीत में नृत्य का अपना विशिष्ट महत्व है। नृत्य के अनेक रूप निमाड़ में प्रचलित हैं। काठी नृत्य, गेर, स्वांग, गम्मत, गणगौर, गरबा इत्यादि को लोकगीतो के लोकनाट्यों को भी उनके साथ जोड़ा है। निमाड़ की सांस्कृति क चेतना में चित्रकला और वास्तु शिल्प का अपना महत्व है। निर्मित चित्र और वास्तुषिल्प लोकजीवन की अद्भूत झांकी प्रस्तुत करत है। निमाड़ में लोककला में भित्ति चित्रों का प्राधान्य है। जिनमें कुलदेवी, जिरोती, नाग, विविधपर्वो के मांडणे आदि शामिल हैं।

लोक में जन्म मरण , विवाह, गीत, कथा, नृत्य, संगीत, कला, संस्कृति, साहित्य के साथ साथ मनुष्य के पल-पल के व्यवहार , हॅसना, बोलना, सोना-बैठना, चलना-फिरना, श्रम-आराम, लडना-भिड़ना, वाद-विवाद, ध्वंस-निर्माण, आस्था-अनास्था, अतीत-वर्तमान, सुख-दुख आदि सभी आ जाते हैं। प्रकृति की वह सत्ता भी आ जाती है जो प्रकृति और पुरूष की परिपूरक है। चिर सहचरी है। निमाड़ी लोकजीवन में परंपराओं और प्रथाओं का अत्यधिक महत्व है। ऊपर से जीवन कितना ही बदल गया हो, लेकिन आंतरिक मानस लोपों का अभी भी अपनी परंपराओं , प्रथाओं और लोकविश्वासों के साथ है। निमाड़ी लोक साहित्य , निमाड़ी लोक जीवन का साहित्य है। इसमें ग्रामीण जीवन की समस्त विशेषताएं विद्यमान हैं।

निष्कर्ष

निमाड़ की लोक संस्कृति में लोक की समस्त शक्तियां विद्यमान हैं। निमाड़ी लोक जीवन में परम्पराओं और प्रथाओं का अत्याधिक महत्व है। जीवन कितना भी बदल गया हो लेकिन आंतरिक मानस अभी भी अपनी परंप राओं, प्रथाओं और लोक विश्वासों के साथ है। यहाँ के लोक परंपरावादी हैं। निमाड़ की वाचिक परंपरा उसकी लोकवार्ता मे समाहित है। लोकवर्ता में यहाँ के लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक, मिथक, कहावत, पहेली आदि समल्लित है। हजारों वर्षो से लोक इन पारंपरिक वि धाओं का स्वरूप वाचिक ही रहा है। निमाड़ की वाचिक परंपरा बहुत समृद्ध है निमाड़ में कला परंपरा , नृत्य परंपरा, लोक नाटक परंपरा विस्तृत है। यहाँ चित्रकला परंपरा है। तीज त्यौहारों पर विशेष रूप से चित्र बनाये जाते हैं। इस प्रकार से निमाड़ के साहित्य में पूर्ण रूप से ग्रामीण जीवन की झांकी देखने को मिलती है।

संदर्भ ग्रंथ

1 वंसत निरगुणे- निमाड़ी संस्कृति और साहित्य
2 रामनारायण उपाध्याय - लोक साहित्य समग्र